RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | No.12 | December 2021 | pp. 134-137
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

The language of women's writing of the twenty-first century (with special reference to the story)

इक्कीसवीं सदी के स्त्री–लेखन की भाषा (कहानी के विशेष संदर्भ में)

*Dr. Shruti Sharma

Associate Professor, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

Abstract in English

The language of a woman is inherently different from that of a man. Female language norms are completely different from male language norms. Whether said on the basis of 'text' or on the basis of colloquial language. If the female text is analyzed properly, then it will become clear that its nature is different from the male text. Generally, female language was analyzed on the basis of the criteria of male language and male language was considered as the ideal of female language, but it is necessary that in female works the female language should be analyzed in a different linguistic structure. It should be read free from the urges and pressures of patriarchal language.

Keywords: *Feminine language, female literature, patriarchy, menstruation, abortion, conflict*

Abstract in Hindi

स्त्री की भाषा पुरुष की भाषा से स्वभावतरू भिन्न होती है। स्त्री भाषा के मानदंड पुरुष भाषा के मानदंड से बिल्कुल अलग होते हैं। चाहे 'पाठ' के आधार पर कहें या बोलचाल की भाषा के आधार पर। स्त्री पाठ का यदि ठीक–ठीक विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इसकी प्रकृति पुरुष पाठ से भिन्न होती है। आमतौर पर पुरुष भाषा के मानदंड के आधार पर ही स्त्री भाषा को विश्लेषित किया गया और पुरुष की भाषा को ही स्त्री की भाषा का आदर्श बताया गया लेकिन यह ज़रुरी है कि स्त्री कृतियों में स्त्री–भाषा को भिन्न भाषिक संरचना में विश्लेषित किया जाए। उसे पितृसत्तात्मक भाषा के आग्रहों और दबावों से मुक्त करके पढ़ा जाए।

मुख्य शब्द: *स्त्रीनिष्ठ भाषा, स्त्री–साहित्य, पितृसत्तात्मक, माहवारी, गर्भपात, संघर्ष।*

Article Publication

Published Online: 15-Dec-2021

***Author's Correspondence**

Dr. Shruti Sharma

Associate Professor, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

drshrutisharma68[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary.This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

यह माना जाता रहा है कि स्त्रियों की बोलचाल की भाषा झिझकभरी और अतार्किक होती है। स्त्रियाँ भावुक होकर बातें करती हैं। ये विमर्श पुरुषों के दिए हुए हैं लेकिन तथ्य यह है कि ये नकारात्मक गुण पुरुषों में भी मिलेंगे। यदि स्त्रियों की बोलचाल की भाषा पर ध्यान दिया जाए तो मिलेगा कि वे बातचीत के दौरान पुरुषों की तरह पांडित्यपूर्ण या भारी–भरकम शब्दों का प्रयोग नहीं करतीं। सरल शब्दों और छोटे और संक्षिप्त वाक्यों में स्त्रियाँ अपनी बात रखती हैं लेकिन ये गंभीर और गहरे अर्थ को व्यंजित करने वाला होता है। साथ ही इन वाक्यों से स्त्री–जीवन के कटु अनुभवों के परत–दर–परत खुलते हैं। यदि स्त्री द्वारा कहे गए शब्दों पर गौर किया जाए तो अनेक छुपे हुए अर्थ निकल आते हैं जो स्त्री जीवन की उपेक्षा, उनके संघर्ष की वास्तविकता को उजागर करता है। इसलिए स्त्री भाषा अपनी प्रकृति और स्वभाव में पुरुष भाषा से भिन्न है।

महिलाओं के विकास के लिए अब तक के सफर में किए गये सारे प्रयत्नों के फलस्वरूप आज स्त्री एक हद तक समाज के केन्द्र में आ रही है। विकास की इस निरंतरता में साहित्य का अपना निजी महत्त्व है। साहित्य में स्त्री–साहित्य और भाषा एक महत्वपूर्ण साधन हैं। लेखिकाओं ने स्त्री–मुक्ति के विभिन्न पक्षों में स्त्रीनिष्ठ भाषाई संरचना का मोड़ स्वीकार किया। इसलिए महिला कहानीकारों ने साहित्य–सृजन की प्रक्रिया में अपने शरीरनिष्ठ अनुभूति को अभिव्यक्त करने में स्त्रियोचित भाषाई संरचना का निर्माण करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत संदर्भ में स्त्री भाषा के सम्बन्ध में विख्यात लेखिका अनामिका का कथन द्रष्टव्य है–"स्त्री–भाषा की सबसे बड़ी ताकत है त्रास और मुक्ति के आनन्द का समायोजन, तर्क और अंतःप्रज्ञामूलक उस अर्द्धविस्मृत भाषिक लय का समायोजन जो गर्भगृह में माँ की देह से छनकर शिशु की देह में उतर आता हैकृप्रसवकालीन

क्रमण और संकुचन, स्तन पकड़ाने–झुड़ाने की लय, बत्ती जलने–बुझाने की लय, स्वीकार–निषेध की लय एक तरह से औरतों के जीवन की लय भी हो जाती है और इनकी भाषा भी।"[1]

स्त्री पक्ष को स्थापित करने के लिए महिला कहानीकारों ने सहज और स्वाभाविक ज्ञान–पद्धति का उपयोग किया है। स्त्री मन की अनुभूति और संवेदनशीलता पुरुषों से भिन्न होने के कारण उनकी भाषा में भी भिन्नता होना स्वाभाविक है। ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, अल्पना मिश्र, मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि ने आत्मकथात्मक शैली में कई कहानियाँ लिखी हैं। आत्मकथात्मक शैली में लिखने से उनकी कहानियों में सशक्तता की अभिव्यक्ति हुई है। उस शैली में मुख्य पात्र अपने अकेलेपन, सामाजिक संरचना जैसी बातों से पाठक को परिचित कराते हैं। उदाहरणार्थ अलका सरावगी की 'आक एगरसी' नामक कहानी में ऐसा वर्णन मिलता है–"मैं बहुत तेजी से गहरी साँझ में तेज, कदमों से दोस्त के घर की ओर चला जा रहा था। मैं बहुत जल्दी में था क्योंकि मैं दोस्त को बहुत जल्दी एक बात कह देना चाह रहा था। मुझे डर भी था कि कल रात के स्वप्न की तरह सचमुच दोस्त ने आत्महत्या न कर ली हो।"[2]

इस संदर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि स्त्री पाठ खुला होता है। वह पुरुष पाठ की तरह बंद नहीं होता। स्त्री पाठ अनंत और अंतहीन होता है। वह पुरुष पाठ की तरह खत्म नहीं हो जाता। स्त्री द्वारा किसी भी विषय पर लिखे आलेख में हर पैराग्राफ़ अलग परिप्रेक्ष्य पर ज़ोर देता दिखाई देगा हालांकि उसमें विषयांतर की भावना नहीं होती। इसके अतिरिक्त उसमें यह स्पेस होता है उस लेख में कुछ विषय बाहर से जोड़ दिए जाएँ लेकिन पुरुष लेख में यह स्पेस नहीं होता कि आप बीच में कुछ अपनी ओर से जोड़ दें। स्त्री लेख बहुत छोटे वाक्यों और सरल शब्दों में लिखे जाते हैं। हालांकि पुरुष सख़्त शब्दों और लम्बे वाक्यों का अमूमन प्रयोग करते हैं। स्त्रीवादी वर्जीनीया वुल्फ़ ने पुरुष वाक्यों को क्रमानुवर्ती माना और उसे खारिज किया। उनके अनुसार पुरुष वाक्यों में मातहत बनाने का भाव होता है। यही वजह है कि स्वयं वुल्फ़ ने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जो मातहत नहीं बनाते और जो सामंजस्य के भाव से संपृक्त होते हैं।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'अवक्षेप' कहानी में कथावाचिका स्वयं कहती हैं–"मैं बेखबर अपने मनपसंद कोने में बैठकर अगले दिन होनेवाली केमिस्ट्री के पेपर की तैयारी कर रही थी, सर्दियों के दिन थे। ...आदिवासी छात्रावास में शोर गूँजा। चीख, चिल्लाहटें, छोटी लड़कियों का रोना...मुझे छत पर से कुछ नहीं दिखा, मैं कुछ समझ नहीं सकी...कमरे में जाकर मैं कपड़े बदलकर आदिवासी छात्रावास दौड़ जाती..."[3]

अल्पना मिश्र की 'तमाशा' कहानी में इस प्रकार का चित्रण मिलता है–"मैं दरवाज़े के अंदर न जाकर बाहर ही रुक जाती हूँ। खीझ रही हूँ । झल्ला गयी हूँ। मुझ पर तर्जनी रखकर सबको चुप रहने का इशारा करती हूँ।"[4]

स्त्री–पुरुष के यौन–सम्बन्ध के चित्रण में भी लेखिकाओं ने स्त्रीनिष्ठ भाषिक अभिव्यक्ति की तलाश की है। मैत्रेयी पुष्पा, नीलाक्षी सिंह, प्रत्यक्षा, मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि कहानीकारों ने यौन–मुक्ति के विभिन्न पहलुओं को आज के परिवेश में चित्रित किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि रचनाकारों ने इसके चित्रण में जिस भाषा को स्वीकारा है वह स्त्रीनिष्ठ भाषाई संरचना के निर्मिति की प्रक्रिया है। उसमें स्त्रीनिष्ठ शारीरिक अनुभूति की भाषिक अभिव्यक्ति मिलती है। उदाहरणार्थ मैत्रेयी पुष्पा की 'उज़्रदारी' कहानी में देख सकते हैं–"शादी–ब्याह की हथकड़ी बातों से कट जाती है और आज़ाद होकर मर्द की तरह जी सकती है औरत।"[5] प्रत्यक्षा की 'फूलपुर की फुलवरिया मिसराइन' कहानी में भी स्त्रीनिष्ठ भाषिक अभिव्यक्ति है–"फुलवरिया सजधज के तैयार होती, सखी सहेलियों से मिलती–जुलती, खूब हँसती। शत–प्रतिशत कभी रामावतार की याद आती तो अपमान से चेहरा लहक जाता और उसकी सहेलियों में धंसा अपना दांत याद आता।...लौण्डे लपाड़ों की फब्तियाँ शरीर पर फिरने लगतीं, मुछंदर का गीत छाती के बीच धड़ाम–धड़ाम थाप देने लगता।"[6]

स्त्री का मुख्य परिवेश घर–आँगन है। पति–बच्चे, सास–ससुर, देवर–ननद से उसकी गृहस्थी पूर्ण होती है। 21वीं सदी की महिला कहानीकारों की कहानियों में विशिष्ट प्रकार के शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। जैसे–रोटी, चूल्हा, चौका, बर्तन, प्याली, कटोरी, प्लेट, घड़ा, गोबर, चाली, मांग, सिन्दूर, चूड़ी, बाल–बच्चा, नाश्ता–रिश्ता, साज–सज्जा, बहू–बेटियाँ आदि शब्दों की बहुलता है। इससे भिन्न होकर युवा पीढ़ियों की (अल्पना मिश्र, नीलाक्षी सिंह, मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंखुडी सिन्हा, सुषमा मुनीन्द्र) कहानियों में नये–नये तकनीकी शब्दों का प्रयोग एवं अंग्रेजी शब्दों का बाहुल्य हैकृजैसेकृटेलीविज़न, इंटरनेट, मोबाइल, एस.एम.एस., डियोडरेन्ट, परफ्यूम्स, टाल्कम पाउडर, लिपस्टिक, चिली सॉस, न्यूडल्स, मिनरल वाटर। इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव युवा पीढ़ी की कहानियों में ज्यादा है। क्योंकि परिवेश के अनुसार कथाकार का भी बदलना जरूरी है। सुषमा मुनीन्द्र की 'ऑनलाइन रोमांस' कहानी का वाक्यांश इस प्रकार है–"नेट पर तमीज ही सीखती हूँ। कोस्मोपोलिटन मॉनरिज्म। माँ तुम नहीं जानती इंटरनेट का असीमित भंडार है और अपडेट नॉलेज के लिए इसका नियमित इस्तेमाल कितना जरूरी है। इंटरनेट स्टूडेंट के लिए रिक्वायरमेंट बन जाता है।"[7]

अल्पना मिश्र की 'भय' कहानी में माहवारी के एहसास को सच्ची अभिव्यक्ति दी गयी है। अल्पना मिश्र की 'भय' कहानी की ऐसी घटनाएँ इसके सशक्त उदाहरण हैं–"मैं फिर से भरसक गरदन मोड़कर अपनी कमर के पीछे का कुर्ता देख रही हूँ–कुछ लगा तो नहीं? अजीब लग रहा है, लोग देख रहे होंगे। क्या मैं दीदी की तरह देख रही हूँ? सिहर गयी मैं। खून! अभी कैसे लग सकता है? इस वक्त में खून कहाँ आता है। फिर भी तसल्ली करती रहती थी।"[8] प्रस्तुत कहानी में ही गर्भपात का वर्णन हुआ है–"मैं अकेले–अकेले रोने लगती हूँ। गर्भपात! अपने ही शरीर से कुछ अलग हो जाने का भय ! दीदी मुझे बचाओ, मैं रो रही हूँ।"[9]

इस प्रकार लेखिकाओं की भाषा स्त्री संस्कृति से जुड़ी हुई भाषा है। अल्पतम शब्दों में स्त्री के जीवन–दर्शन को अभिव्यक्त करानेवाली सूक्तियाँ उनकी निजी विशेषता है।उदाहरणार्थ अल्पना मिश्र की उपस्थिति कहानी का कथन द्रष्टव्य है–"स्त्री नाम नहीं हो सकती? कभी भी, किसी भी क्षण उसे बदल देना पड़ता है अपने आप।...यानी चोला उतार कर आता है, जैसे–आत्मा चोला उतारकर आती है ।"[10] ('भीतर का वक्त'–अल्पना मिश्र)

"किससे कहें? कैसे कहें? हे प्रभु! कहाँ जाएगी यह स्त्री?"[11] ('कथा के गैर जरूरी प्रदेश में', अल्पना मिश्र)

"शादी के बाद किसी भी लड़की को नया जन्म मिलता है, जीवन उसको अपनी तरह नहीं, दूसरों की इच्छा से ढालना होता है ।"[12] ('मुस्कुराती औरतें', मैत्रेयी पुष्पा)

"क्या सबकी जिन्दगी असल में ऐसी ही होती है यानी सब औरतों की? क्या उसकी जिन्दगी भी ऐसी होगी?"[13] ('कन्फेशन', अलका सरावगी)

"ये युवा हमें वृद्धाश्रम के अलावा क्या देंगे? महास्वार्थी है यह पीढ़ी।"[14] ('बिगडैल बच्चे' मनीषा कुलश्रेष्ठ)

"मैं तो हमेशा से लड़कियों की आजादी की काल रही हूँ।"[15] ('चिरकुमारी', ममता कालिया)

"सीता–सावित्री, अरे मधुबाला, तुम किसी की पत्नी और माँ से पहले मधुबाला हो । संभावनाओं से भरी एक स्त्री, जिसमें कुछ सार्थक करने का दम–खम है।"[16] ('जोंक', सुषमा मुनीन्द्र)

"शादी करके अपने लक्ष्य से मैं नहीं भटकूँगी सर।"[17] ('प्रेत–कामना', मनीषा कुलश्रेष्ठ)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीनिष्ठ भाषा की संरचना के निर्माण में समानता दिखती है। स्त्रीनिष्ठ भाषिक अभिव्यक्ति उनकी कहानियों को प्रामाणिकता प्रदान करती है। लेखिकाएँ उस परम्परा के पक्षधर हैं जो साहित्य में कलात्मकता की अपेक्षा भावात्मकता पर अधिक बल देती है। समाज में स्त्रियों की स्थिति में सुधार उनका अभीष्ट है, दीन–दुःखी, शोषित–वंचित की स्थिति उनका मुख्य लक्ष्य है। अतः उनके साहित्य में संदेश महत्वपूर्ण एवं शैली गौण है।

स्त्री पाठ की भाषा पर जब भी हम विचार करें तो यह याद रखें कि वह पुरुष भाषा के मानकों को तोड़कर बनी है। प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी के शब्दों में, "स्त्रीवादी पठन सैद्धांतिकी की दृष्टि से पाठ, अर्थ का घर नहीं है अपितु वह संवाद की जगह है। स्त्री–पाठ की भाषा को निश्चित भाषिक अर्थों में विश्लेषित नहीं करना चाहिए। अपितु पाठ में निहित अस्पष्ट अर्थों का खुलासा करना चाहिए। पाठ को समझने में इससे मदद मिलेगी।" अस्पष्ट अर्थों की प्राप्ति के लिए पाठ में निहित वर्तमान के साथ–साथ अतीत को भी समझने की ज़रुरत है। इसलिए स्त्री पाठ को विखंडित करके पढ़ा जाना चाहिए। इससे पाठ में निहित सांस्कृतिक और सामाजिक अतीत सामने आएगा। साथ ही स्त्री के अनुभवों और संघर्षों को वर्तमान के आलोक में देखना चाहिए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 21वीं सदी की लेखिकाओं की कहानियों में नारी यथार्थ 'जैसे का तैसा' प्राप्त है। उनकी कुछ कहानियों में स्त्री अपनी स्वतंत्रता के लिए विद्रोह नहीं करती, वह अपने पुराने जीवन मूल्य और परम्पराओं का पालन करती हुई अकेलेपन और बेगानेपन के त्रास को झेलती है। दूसरी ओर बदलती परिवेश में स्त्री के खुलेपन की चर्चा भी उनकी कहानियों में है। इस तरह की कहानियों में नारी पात्र अपनी खुशी के लिए जीना चाहती है, विद्रोह भी करती है। लेखिकाओं ने नारी की दशा एवं दिशा पर जाँच–पड़ताल करते हुए नारी चेतना की वस्तु स्थिति को उजागर किया है। उनकी रचना प्रक्रिया में हमेशा स्त्री विशिष्ट भाषा की बहुतायत है।

संदर्भ–

1. अनामिका, स्त्री–विमर्श का लोकपक्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 157–158
2. अलका सरावगी, दूसरी कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ. 58
3. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008, पृ. 94
4. अल्पना मिश्र, छावनी में बेघर, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008, पृ. 47
5. मैत्रेयी पुष्पा, गोमा हँसती है, किताब घर, प्रकाशन, दिल्ली, 1998, पृ. 118
6. राजेन्द्र यादव, हंस, जुलाई 2007, पृ. 57
7. सुषमा मुनीन्द्र, ऑन लाइन रोमांस, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 248
8. अल्पना मिश्र, भीतर का वक्त, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2006, पृ. 29
9. वही, पृ. 42
10. वही, पृ. 15
11. वही, पृ. 40
12. मैत्रेयी पुष्पा, पियरी का सपना, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ. 16
13. अल्का सरावगी, दूसरी कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ. 174
14. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008, पृ. 121
15. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005, पृ. 227
16. सुषमा मुनीन्द्र, ऑन लाइन रोमांस, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 77
17. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008, पृ. 26